श्रीनृसिंहकवचम्

488

श्रीनृसिंहकवचम्

श्रीनृसिंहस्तोत्र एवं आरती-सहित

सम्पादक

शिवजीत सिंह

प्रकाशक :

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी - २२१००१

प्रकाशक : रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

सम्पादक : शिवजीत सिंह

मूल्य :

मुद्रक : भारत प्रेस, कचौड़ीगली
वाराणसी-२२१००१

प्रह्लादकृत

अथ श्रीनृसिंहकवचम्

।। विनियोग।।

अस्य श्रीनृसिंहकवचमंत्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, नृसिंहो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सर्वव्यापीस्तम्भभवाय इति बीजम्, श्रीः शक्तिः गुह्यरूपधृग् इति कीलकम्, श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

।। करन्यास।।

ॐ योगीहृत्पद्मनिवासाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ नृसिंहाय तर्जनीभ्यां नमः।।

ॐ स्वप्रकाशाय मध्यमाभ्यां नमः।।
ॐ सूर्यसोमाग्निलोचनाय अनामिकाभ्यां नमः।।
ॐ दिव्यनखास्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।
ॐ विद्युत्जिह्वाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

।। हृदयादिन्यास।।

ॐ योगीहृत्पद्मनिवासाय हृदयाय नमः।।
ॐ नृसिंहाय शिरसे स्वाहा।।
ॐ स्वप्रकाशाय शिखायै वषट्।।
ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय कवचाय हुम्।।
ॐ दिव्यनखास्त्राय नेत्राभ्यां वषट्।।
ॐ विद्युत्जिह्वाय अस्त्राय फट्।।

।। अथ ध्यानम्।।

कर्पूरधामधवलं कटकाङ्गदादि-
भूषं त्रिनेत्रशशिशेखरमण्डितास्याम्।।
वामाङ्गसंश्रितरमा नयनाभिरामं,
चक्राब्जशंखसगदनं नृहरिं नमामि।। १।।

अर्थ–जो कपूर की राशि के समान श्वेतवर्ण हैं, कंकण तथा केयूर आदि आभूषणों से जो शोभित हैं, नेत्रों को सुन्दर दिखाई देनेवाली लक्ष्मी जिनके बायें अंग में स्थित हैं, जो चक्र, कमल, शंख तथा गदा से युक्त हैं; उन भगवान् नृसिंह को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।।

ध्यात्वा नृसिंहं देवेशं हेमसिंहासनस्थितम्।
विततास्यं त्रिनयनं शरदिन्दुसमप्रभम्।। २।।

लक्ष्म्यालिङ्गितं वामभागं सिद्धैरुपासितम्।
चतुर्भुजं कोमलांगं मणिकुण्डलभूषितम्॥ ३॥
हारोपशोभितोरस्कं रत्नकेयूरमण्डितम्।
तप्तकांचनसंकाशं पीतनिर्मलवाससम्॥ ४॥
इन्द्रादिसुरमौलीस्थवरमाणिक्यदीप्तिभिः।
विराजितपदद्वन्द्वं शंखचक्रादिहेतिभिः॥ ५॥
गरुत्मता च विनयात्स्तूयमानं मुदान्वितम्।
स्वहृत्कमलमध्यस्थं कृत्वा तु कवचं पठेत्॥ ६॥

अर्थ–सोने के सिंहासन पर स्थित, विकराल मुखवाले, त्रिनेत्र, शरद्कालीन चन्द्रमा के समान प्रभावाले, जिनके बाँयें भाग में लक्ष्मी सुशोभित हैं, सिद्धों के द्वारा जिनकी उपासना हो रही है, चार भुजावाले, कोमल शरीरवाले,

मणि-कुण्डल से शोभित, जिनके वक्षःस्थल पर हार शोभा पा रहा है, रत्नों से युक्त आभूषणों से जिनकी भुजा शोभित हो रही है, जो तपे हुए सोने के समान सुन्दर पीताम्बर शरीर पर धारण किये हैं, इन्द्र आदि देवताओं के मुकुटों में जड़ित श्रेष्ठ मणियों की कान्ति से शंख-चक्र आदि से चिह्नित जिनके दोनों चरण शोभायमान हैं, नम्र हो गरुड़जी जिनकी स्तुति कर रहे हैं, ऐसे प्रसन्न मुख-मुद्रावाले देवेश श्रीलक्ष्मीनृसिंह का ध्यानकर उनको अपने हृदय कमल के मध्य में स्थापित करके इस नृसिंह-कवच का पाठ करें॥२-६॥

॥ इति श्रीनृसिंहकवचम्॥

श्रीनृसिंहगायत्रीमंत्र

ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नृसिंह प्रचोदयात॥

प्रह्लादकृत

अथ श्रीनृसिंहकवचमंत्र

नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थसम्भवः।
सर्वव्यापी स्तंभवासी भालं मे रक्षतु बली॥ १॥
श्रुतौ मे पातु नृहरिर्मुनिवर्यस्तुतिप्रिय।
नासां मे सिंहनासौ मुखं लक्ष्मीमुखप्रिय॥ २॥

संसार की रक्षा के लिये प्रगट हुए नृसिंह मेरे शिर की रक्षा करे, सर्वव्यापी स्तंभ में निवास करनेवाले बलशाली नृसिंह मेरे मस्तक की रक्षा करें। श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा की गई स्तुति से प्रसन्न होनेवाले नरसिंह मेरे कानों की रक्षा करें, सिंहनासिकावाले नरसिंह मेरी नासिका की रक्षा करें, लक्ष्मी के मुख से प्रेम करनेवाले नरसिंह मेरी मुख की रक्षा करें॥१-२॥

सर्वविद्याधिपः पातु नृसिंहो रसनां मम।
नृसिंहः पातु मे कण्ठं सदा प्रह्लादवंदितः॥ ३॥
वक्त्रं पात्विन्दुवदनः भूभारनाशकृत्।
दिव्यास्त्रशोभितभुजो नृसिंहः पातु मे भुजौ॥ ४॥
करौ मे देववरदो नृसिंहः पातु सर्वतः।
हृदयं योगिहृत्पद्मनिवासः पातु मे हरिः॥ ५॥

सम्पूर्ण विद्याओं के अधिपति नृसिंह मेरी जिह्वा की रक्षा करें, प्रह्लाद के द्वारा वंदित भगवान् नृसिंह सदा मेरे कण्ठ की रक्षा करें॥३॥ चन्द्रमा के समान मुखवाले नृसिंह मेरे मुख की रक्षा करें, पृथ्वी के भार का नाश करनेवाले नृसिंह मेरे कंधों की रक्षा करें, दिव्य अस्त्रों से शोभित भुजावाले नृसिंह मेरी भुजाओं की रक्षा करें॥४॥ देवताओं को वरदान देनेवाले नृसिंह

मध्यं पातु हिरण्याक्षरक्षः कुक्षिविदारणः।
नाभिं मे पातु नृहरिः स्वनाभिब्रह्मसंस्तुतः॥ ६॥
ब्रह्माण्डकोटयः कट्या यस्यासौ पातु मे कटिम्।
गुह्यं मे पातु गुह्यानां मन्त्राणां गुह्यरूपधृक्॥ ७॥

मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें, स्वयं नृसिंह मेरे चारों ओर की रक्षा करें। योगियों के हृदयकमल में निवास करनेवाले श्रीहरि मेरे हृदय की रक्षा करें॥५॥ हिरण्याक्ष राक्षस के उदर का विदारण करनेवाले नृसिंह मेरे मध्यभाग की रक्षा करें, अपनी नाभि से उत्पन्न ब्रह्माजी से स्तुत नृसिंह मेरी नाभि की रक्षा करें॥६॥ जिनकी कटिभाग में करोड़ों ब्रह्माण्ड स्थित हैं, ऐसे नृसिंह मेरे कटिभाग की रक्षा करें, गोपनीय मंत्रों में गुप्तरूप से निवास करनेवाले भगवान् मेरे गुह्य अंगों की रक्षा करें॥७॥

उरू मनोजवः पातु जानुं नृहरिरूपधृक् ।
जंघे पातु धराभारहर्ता गुल्फौ नृकेशरी॥ ८॥
सुरराज्यप्रदः पातु पादौ मे नृहरीश्वरः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः पातु मे सर्वतस्तनुम्॥ ९॥
इतः परं मंत्रपादौ पातु मे सर्वदिक्षु च।
महोग्रः पूर्वतः पातु महावीरोऽग्निभागतः॥ १०॥

मन के समान वेगवान् नृसिंह मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें, नृसिंह का रूप धारण करनेवाले भगवान् मेरे घुटनों की रक्षा करें, पृथ्वी का भार हरण करनेंवाले जंघों की और नृसिंह भगवान् मेरे दोनों टखनों की रक्षा करें॥८॥

इन्द्र को राज्य प्रदान करनेवाले भगवान् नृसिंह मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें, हजार शिरवाले पुरुष मेरे शरीर की सब ओर से रक्षा करें॥९॥

दक्षिणे च महाविष्णुः महाज्वालास्तु नैर्ऋते।
पश्चिमे पातु सर्वेशः सर्वात्मा सर्वतोमुखम्॥ ११॥
नृसिंहः पातु वायव्ये सौम्ये भीषणविग्रहः।
ईशाने पातु भद्रो मां सर्वमंगलदायकः॥ १२॥

इसके आगे मंत्रों को गति प्रदान करनेवाले भगवान् मेरी सब दिशाओं में रक्षा करें, पूर्व दिशा में महाउग्र, आग्नेय दिशा में महावीर मेरी रक्षा करें॥१०॥

महाविष्णु दक्षिण में और महाज्वालारूप नैर्ऋत्य में, सर्वेश्वर पश्चिम में और सर्वात्मा नृसिंह सर्वप्रकार से मेरी रक्षा करें॥११॥

नृसिंह वायव्यकोण में उत्तर में भयानक शरीर धारण करनेवाले नृसिंह तथा सम्पूर्ण मंगल प्रदान करनेवाले भगवान् नृसिंह ईशानकोण में मेरी रक्षा करें॥१२॥

संसारभयतः पातु मृत्युर्मृत्युजयो हरिः।
जलं रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः॥१३॥
अटव्यां नारसिंहस्तु सर्वतः पातु केशवः।
सुप्ते स्वयंभुवः साक्षात् जाग्रते च जनार्दनः॥१४॥
इदं नृसिंहकवचं प्रह्लादमुखनिर्गतम्।
भक्तिमान्यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१५॥

संसार के भय से मृत्युञ्जय मृत्युस्वरूप श्रीहरि रक्षा करें। वाराह जल में और वामन स्थल में रक्षा करें॥१३॥ वन में नृसिंह, सम्पूर्ण जगह केशव तथा सोते हुए साक्षात् स्वयंभू और जगने पर जनार्दन भगवान् रक्षा करें॥१४॥ प्रह्लाद के मुख से निकला हुआ यह कवच यदि मनुष्य भक्तिभाव से रोज पाठ करे तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है॥१५॥

पुत्रवान् धनवांल्लोके दीर्घायुश्चाभिजायते।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥१६॥
सर्वज्ञत्वं समवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।
भूम्यन्तरिक्षदिव्यानां ग्रहाणां विनिवारणम्॥१७॥
वृश्चिकोरगसम्भूतविषाय हरणं परम्।
गुह्यराक्षसयक्षाणां दूराद्विद्रावकारणम्॥१८॥

मनुष्य इस कवच का पाठ करने में पुत्रवान्, धनवान् होकर संसार में दीर्घायु होता है और जिस-जिस का चिन्तन करता है, उस-उस को प्राप्त करता है॥१६॥ कवच का पाठ करनेवाला सर्वज्ञ हो जाता है, वह सर्वत्र विजयी होता है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और दिव्यलोकों में रहनेवाले ग्रहों का यह कवच निवारक है॥१७॥ बिच्छू, एवं सर्पदंश से उत्पन्न विष को हरनेवाला

भूर्जे वा तालपत्रे वा लिखितं कवचं शुभम्।
करमूले धृतं येन सिद्धयस्तत्करे स्थिताः॥१९॥
नृसिंहकवचेनैव रक्षितो वज्ररक्षित।
देवासुर मनुष्येषु स्वाज्ञया विजयं भवेत॥२०॥
एकसन्ध्यं द्विसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
प्राप्नोति परमारोग्यं विष्णुलोके महीयते ॥२१॥

तथा गुह्यकों, राक्षसों और यक्षों को दूर भगा देनेवाला है॥१८॥ भोजपत्र या तालपत्र पर लिखकर इस शुभ कवच को भुजा में बाँधने से सिद्धियाँ उसके हाथ में स्थित हो जाती हैं॥१९॥ नृसिंह कवच को धारण करने से मनुष्य की वज्र से भी रक्षा होती है तथा देवों, असुरों, मनुष्यों पर उसकी आज्ञा मात्र से विजय होती है॥२०॥ एक सन्ध्या के समय, दोनों सन्ध्या के समय या तीनों

द्वात्रिंशतिसहस्राणि पठेच्छुद्धात्मनां नृणाम्।
कवचस्यास्य मन्त्रस्य मन्त्रसिद्धिः प्रजायते।।२२।।
अनेन मंत्रराजेन कृत्वा भस्माभिमंत्रितम्।
तिलकं धारयेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत्।।२३।।
त्रिवारं जपमानस्तु पूतं वार्यमभिमन्त्र्य च।
प्राशमेद्यं नरं मंत्रं नृसिंहध्यानमाचरेत्।।२४।।

सन्ध्या के समय जो कोई इस कवच का पाठ करता है, वह परम आरोग्यता पाकर विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है।।२१।। इस कवच मन्त्र का जो मनुष्य शुद्ध आत्मा से बत्तीस हजार पाठ करे, उसे मन्त्र की सिद्धि हो जाती है।।२२।।

यह कवच मंत्रराज है, इससे अभिमन्त्रित करके भस्म का तिलक धारण करने से उसका (जिसको तिलक लगाये) ग्रहभय दूर हो जाता है।।२३।।

तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति ये च स्युः कुक्षिसम्भवाः।
किमत्र बहुनोक्तेन नृसिंहसदृशो भवेत्॥२५॥
षण्मासे फलमाप्नोति कवचस्य प्रभावतः।
मनसा चिन्तितं यद्यत्तत्तत्प्राप्नोति निश्चितम्॥२६॥

इस कवच के मंत्र को तीन बार पढ़कर जल अभिमंत्रित करे, फिर नृसिंह भगवान् का ध्यान कर रोगी आदमी को पिलाने से उस रोगी के उदरजन्य सब प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं अधिक क्या कहा जाय, वह मनुष्य नृसिंह के समान हो जाता है॥२४-२५॥

कवच क प्रभाव से छः मास तक नियमपूर्वक पाठ करने से फल की प्राप्ति हो जाती है और मन में जिसे प्राप्त करने की चिन्ता होती है, निश्चित रूप से उसकी प्राप्ति होती है॥२६॥

इति परमरहस्यसारभूतं कवच-
वरं पठति प्रकृष्टभक्त्या ।
स भवति धनधान्यपुत्रलाभी
तनुविगमे समुपैति नारसिंहम्॥२७॥

यह श्रेष्ठ कवच सम्पूर्ण रहस्यों का सारतत्त्व है, जो उत्कृष्ट भक्ति से इस कवच का पाठ करता है, वह धन-धान्य-पुत्र आदि प्राप्त करता है तथा शरीर छूटने के उपरान्त नृसिंह तत्त्व को प्राप्त करता है॥२७॥

॥ इति श्रीनृसिंहपुराणे प्रह्लादोक्तनृसिंहकवचम्॥

नृसिंहजपमंत्र

जप विनियोगः–ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंहमंत्रस्य पद्मभव ऋषिः अति जगतीछन्दः श्रीनरकेशरी देवता श्रीं बीजं ह्रिं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

१. ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे
आविराविर्भव वज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान्
रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा।
अभयमभयमात्मनि भूयिष्ठा ॐ क्ष्रौम्॥

(श्रीमद्‌भागवत ५।१८।८)

ओंकारस्वरूप भगवान् नृसिंह को नमस्कार है। आप तेजों के भी तेज हैं, आपको नमस्कार है। हे वज्रनख! हे वज्रदंष्ट्र! प्रकट होइये। मेरी कर्मवासनाओं

२. ॐ क्षौं प्रौं ह्रौं रौं ब्रौं ज्रौं नमः स्वाहा।।

३. ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

४. त्र्यक्षर मंत्र–१. ह्रीं क्षौं ह्रीं। २. ॐ क्षौं ॐ।

जप-फल–कर्णनेत्रशिरःकण्ठरोगान्मन्त्रो विनाशयेत।
अभिचारकृतां पीडां मनुमंत्रित भस्म च।।

को जला डालिये, जला डालिये। अज्ञानरूप अन्धकार का नाश कीजिये, नाश कीजिये। ॐ स्वाहा। हमारे अन्तःकरण को अभय कीजिये। ॐ क्ष्रौम्!

जप-फल– कान, नेत्र, शिर और कण्ठ के रोगों का यह मन्त्र विनाश कर देता है और इस मन्त्र से मंत्रित भस्म के धारण मात्र से तांत्रिक अभिचार-जन्य कष्ट दूर होते हैं। (नोटः जप का दशांश पायस से हवन करना चाहिए।)

नृसिंह-स्तोत्र

ब्रह्मोवाच

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये विचित्रवीर्याय पवित्रकर्मणे।
विश्वस्य सर्गस्थितिसंयमान् गुणैः स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने॥१॥

ब्रह्माजी बोले–असीम शक्तिवाले, अलौकिक पराक्रमवाले, पवित्रकर्म करनेवाले, अपनी लीला से गुणों के द्वारा संसार की सृष्टि, पालन और संहार करनेवाले अविनाशी परमात्मा भगवान् अनन्त को मैं नमस्कार करता हूँ॥१॥

श्रीरुद्र उवाच

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः।
तत्सुतं पाह्युपसृतं भक्तं ते भक्तवत्सल॥२॥

श्रीरुद्रदेव बोले–हे भक्तवत्सल! आपके क्रोध करने का समय तो

कल्प के अन्त में होता है। अभी तो आपने इस क्षुद्र असुर को मारा है, यह उसका पुत्र आपका भक्त है। इस शरण में आये हुए की रक्षा कीजिये।।२।।

इन्द्र उवाच

प्रत्यानीताः परम भवता त्रायता नः स्वभागा
दैत्याक्रान्तं हृदयकमलं त्वद्गृहं प्रत्यबोधि।
कालग्रस्तं कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां ते
मुक्तिस्तेषां न हि बहुमता नारसिंहापरैः किम्।। ३।।

इन्द्र बोले–हे परमेश्वर! आपने हमारी रक्षा करते हुए दैत्य के द्वारा छीने गये हमारे यज्ञभागों को लौटा दिया है। आपका निवासस्थान हमारा हृदयकमल, जो दैत्यों से आक्रान्त था, उसे आपने प्रफुल्लित कर दिया। यह स्वर्गादि का राज्य तो काल का ग्रास है। जो आपके सेवक हैं, उनके लिए तो यह तुच्छ वस्तु है। हे नाथ! आपकी सेवा चाहनेवालों के लिये तो मोक्ष भी प्रिय नहीं है, तो हे नृसिंहदेव! दूसरी वस्तुओं की उन्हें क्या आवश्यकता है?।।३।।

ऋषय ऊचुः

त्वं नस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो येनेदमादिपुरुषात्मगतं ससर्ज।
तद्विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल रक्षागृहीतवपुषा पुनरन्वमंस्थाः॥ ४॥

ऋषिगण बोले–हे आदिपुरुष! आपने तपस्या के द्वारा ही अपने में लीन हुए जगत् की फिर से रचना की थी और कृपापूर्वक उसी आत्मतेज-स्वरूप श्रेष्ठ तप का आपने हमारे लिये उपदेश किया था। इस दैत्य ने उसी तप का उच्छेद कर दिया था। हे शरणागतवत्सल! उस तपस्या की रक्षा के लिए अवतार ग्रहण करके आपने हमारे लिये फिर से उसी उपदेश का अनुमोदन किया है॥४॥

पितर ऊचुः

श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसभं तनू-
जैर्दत्तानि तीर्थ समयेऽप्यपिबत्तिलाम्बु।

तस्योदरान्नखविदीर्णवपाद् य आर्च्छत्
तस्मै नमो नृहरयेऽखिलधर्मगोप्त्रे।। ५ ।।

पितरगण बोले–प्रभो! हमारे पुत्रों के द्वारा दिये गये पिण्डों को यह (असुर) बलपूर्वक छीनकर खा जाता था और तीर्थ में संक्रान्ति आदि के समय तर्पण में दिये गये तिल और जल को पी लेता था। आज आपने अपने नखों से उसका पेट फाड़कर वह सबकुछ लौटाकर मानो हमें दे दिया। आप समस्त धर्मों के एकमात्र रक्षक हैं। हे नृसिंहदेव! हम आपको नमस्कार करते हैं।।५।।

सिद्धा ऊचुः

यो नो गतिं योगसिद्धामसाधुरहारषीद् योगतपोबलेन।
नानादर्पं तं नखैर्निर्ददार तस्मै तुभ्यं प्रणताः स्मो नृसिंह।।६ ।।

सिद्धगण बोले–जिस दुष्ट ने अपने योग और तपस्या के बल से हमारी योगसिद्ध गति को छीन लिया था, उस घमंडी को आपने अपने नखों से फाड़ डाला। हे नृसिंहदेव! हम आपको प्रणाम करते हैं।।६।।

विद्याधरा ऊचुः

विद्यां पृथग्धारणयाऽनुराद्धां न्यषेधदज्ञो बलवीर्यदृप्तः।
स येन संख्ये पशुवद्धतस्तं मायानृसिंहं प्रणताः स्म नित्यम्॥ ७॥

विद्याधर बोले–इस मूर्ख ने अपने बल और पराक्रम के घमंड में चूर होकर अनेक प्रकार की धारणाओं से प्राप्त की हुई हमारी विद्या को व्यर्थ कर दिया था; आपने युद्ध में इसे पशु की भाँति मार डाला। अपनी माया से नृसिंह का रूप धारण किये आपको हम नित्य प्रणाम करते हैं॥७॥

नागा ऊचुः

येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि हृतानि नः।
तद्वक्षः पाटनेनासां दत्तानन्द नमोऽस्तु ते॥ ८॥

नाग बोले–जिस पापी ने हमारे रत्नों और हमारी श्रेष्ठ स्त्रियों का हरण कर लिया था, उसकी छाती को फाड़कर आपने हमारी स्त्रियों को बहुत आनन्दित किया; ऐसे आपको हम नमस्कार करते हैं॥८॥

मनवः ऊचुः

मनवो वयं तव निदेशकारिणो दितिजेन देव परिभूतसेतवः।
भवता खलः स उपसंहृतः प्रभो करवाम ते किमनुशाधि किङ्करान्॥९॥

मनुगण बोले–हे देव! हम आपके आज्ञाकारी मनु हैं। इस दैत्य ने धर्म-मर्यादा को भंग कर दिया था, आपने इसे मार दिया है। आप हम सेवकों को आज्ञा दीजिये कि हम आपके लिये क्या करें?॥९॥

प्रजापतय ऊचुः

प्रजेशा वयं ते परेशाभिसृष्टा न येन प्रजा वै सृजामो निषिद्धाः।
स एष त्वया भिन्नवक्षा नु शेते जगन्मङ्गलं सत्त्वमूर्तेऽवतारः॥१०॥

प्रजापतियों ने कहा–हे परमेश्वर! आपके द्वारा हम लोग प्रजापति बनाये गये थे, परंतु इस दैत्य के द्वारा रोक दिये जाने के कारण हम प्रजाओं की सृष्टि नहीं कर पाते थे। वही यह दैत्य आपके द्वारा छाती फाड़ दिये जाने के कारण सो रहा है। हे सत्त्वमयी मूर्तिवाले! आपका अवतार संसार के

कल्याण के लिये है।।१०।।

गन्धर्वा ऊचुः

वयं विभो ते नटनाट्यगायका येनात्मसाद् वीर्यबलौजसा कृताः।
स एष नीतो भवता दशामिमां किमुत्पथस्थः कुशलाय कल्पते।।११।।

गन्धर्व बोले–हे विभो! हम लोग आपके नाचने, गाने और अभिनय करनेवाले सेवक हैं, जिसने अपने बल-पराक्रम से हमें अपना दास बना रखा था, उसी दैत्य को आपने इस दशा में पहुँचा दिया। क्या कुमार्गगामी का भी कल्याण हो सकता है?।।११।।

चारणा ऊचुः

हरे तवाङ्घ्रिपंकजं भवापवर्गमाश्रिताः।
यदेष साधुहृच्छयस्त्वयाऽसुरः समापितः।।१२।।

चारण बोले–हे हरे! संसार से मोक्ष दिलानेवाले आपके चरणकमलों के हम आश्रित हैं। सज्जनों के हृदय को पीड़ा पहुँचानेवाले इस दैत्य को

आपने समाप्त कर दिया, हम आपकी शरण में हैं॥१२॥

यक्षा ऊचुः

वयमनुचरमुख्याः कर्मभिस्ते मनोज्ञै-
स्त इह दितिसुतेन प्रापिता वाहकत्वम्।
स तु जनपरितापं तत्कृतं जानता ते
नरहर उपनीतः पञ्चतां पञ्चविंश॥ १३॥

यक्षगण बोले–हे नृसिंह भगवान्! अपने श्रेष्ठकर्मों के कारण हम लोग आपके सेवकों में मुख्य माने जाते थे, परन्तु इस दितिपुत्र ने हमें अपनी पालकी ढोनेवाला बनाया था। हे प्रकृति के नियामक परमात्मा! इसके कारण होनेवाले अपने सेवकों के कष्ट को जानकर ही आपने इसे मार डाला॥१३॥

किम्पुरुषा ऊचुः

वयं किम्पुरुषास्त्वं तु महापुरुष ईश्वरः।
अयं कुपुरुषो नष्टो धिक्कृतः साधुभिर्यदा॥ १४॥

किम्पुरुषगण बोले–हे प्रभो! हम लोग अत्यन्त तुच्छ किम्पुरुष हैं और आप महापुरुष एवं ईश्वर हैं। जब साधु पुरुषों ने इसे धिक्कारा तो आपने इस नराधम को नष्ट कर दिया।।१४।।

वैतालिका ऊचुः

सभासु सत्रेषु तवामलं यशो गीत्वा सपर्यां महतीं लभामहे।
यस्तां व्यनैषीद् भृशमेष दुर्जनो दिष्ट्या हतस्ते भगवन्यथाऽमयः।।१५।।

वैतालिक बोले–सभाओं में, ज्ञानयज्ञों में आपके निर्मल यश को गाकर हम महान् प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। हे भगवन्! उस प्रतिष्ठा को इस दुष्ट ने बिल्कुल नष्ट कर दिया। यह भाग्य से वैसे ही आपके हाथ से मारा गया, जैसे रोग से शरीर नष्ट हो जाता है।।१५।।

किन्नरा ऊचुः

वयमीश किन्नरगणास्तवानुगा दितिजेनविष्टिममुनानु कारिताः।
भवता हरे स वृजिनोऽवसादितो नरसिंह नाथ विभवाय नो भव।।१६।।

किन्नरगण बोले–हे ईश! हम किन्नरगण आपके अनुचर हैं। यह दितिपुत्र हमसे बेगारी करवाता था। हे हरे! आपने इस पापी को नष्ट कर दिया। हे नृसिंह! हे नाथ! आप हमारे लिए अभ्युदयकारी हों।।१६।।

विष्णुपार्षदा ऊचुः

अद्यैतद्धरिनररूपमद्भुतं ते दृष्टं नः शरणद सर्वलोकशर्म।
सोऽयं ते विधिकर ईश विप्रशप्तस्तस्येदं निधनमनुग्रहाय विद्मः।।१७।।

विष्णु भगवान् के पार्षद बोले–हे शरणदाता! समस्त लोकों को शान्ति देनवाला आपका यह अद्भुत नृसिंहरूप हमने आज ही देखा है। हे ईश! यह आपका वही आज्ञाकारी सेवक था, जिसे सनकादि ने शाप दे दिया था। आपने इस पर अनुग्रह करने के लिए ही इसका वध किया है ।।१७।।

।। इति श्रीमद्भागवतान्तर्गते सप्तम स्कन्धेऽष्टमध्याये नृसिंहस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

आरती श्रीनृसिंहजी की

जय नरसिंह हरे स्वामी जय नरसिंह हरे।
भक्त जनों के कारण अद्‌भुत रूप धरे।। जय नर० ।।
सिंह रूपधर अपना निज जन दुख हर्ता।
खम्ब मध्य प्रकट भये सेवक सुखकर्ता।। जय नर० ।।
नर और सिंह रूप धर प्रकट भये स्वामी।
निर्भय हुए भक्त जन भय पाये कामी।। जय नर० ।।
प्रकट भये प्रह्लाद के कारण सबको दर्श दिया।
नर और हरि बनकर संकट दूर किया।। जय नर० ।।
दैहिक दैविक भौतिक पाप कटे सारे।
रक्षक निज भक्तन के दानव दल मारे।। जय नर० ।।

शरण रहस्य प्रदाता भव बन्धन हारी।
दुखहारी सुखकारी गदा चक्र धारी॥ जय नर० ॥
अक्षय भक्ति दयार्णव हम सबको दीजे।
पाप ताप हर नर हरि निज जन कर लीजै॥ जय नर० ॥
'शिव स्वरूप' शरणागत अतिमल अघहारी।
पद सरोज रज चाहत नर हरि तनु धारी॥ जय नर० ॥
नर सिंह प्रभु की आरती जो कोई नर गावे।
हर अज्ञान मोह तम मनवांछित फल पावै॥ जय नर० ॥

इति श्रीनृसिंह आरती समाप्त।

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

मुद्रक : भारत प्रेस, कचौड़ी गली, वाराणसी-१

मन्दिरों एवं धार्मिक उत्सवों में पुस्तक भेंट करने वाले
इच्छुक दानी भक्त-जन प्रकाशक से सम्पर्क करें,
उन्हें पुस्तक लागत मूल्य पर दी जायेंगी।

प्रकाशक :

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी